कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम – 2023

'जनमंच'

वाग्धारा

कुपडा, बांसवाडा

प्रस्तावना

आदिवासी जीवनशैली महात्मा गाँधी के स्वराज की अवधारणा का एक श्रेष्ठ उदाहरण है। धरती पर आदिवासी समुदाय ही एक ऐसा वर्ग है जिसने स्वराज आधारित जीवन पद्धति या जीवन दर्शन का अनुसरण तो किया ही है साथ ही आदिकाल से अपनी परंपरा, अपनी संस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों को न सिर्फ संचित करके रखा है बल्कि इनका संरक्षण और संवर्धन भी किया है। ऐसे समुदायों के कई उदाहरण विश्व के कई कोनों में देखने को मिलते हैं परंतु बढ़ते उपभोक्तावाद और आधुनिकता के कारण ये लुप्तप्राय: होते जा रहे हैं। विकास के नाम पर शहरीकरण, मशीनीकरण दैत्याकार रूप में फैलते जा रहे हैं, तो दूसरी तरफ गांवों की रौनक शहरों की ओर कूच करती जा रही है। गांवों से युवा-शक्ति का पलायन रोकना आज एक बड़ी चुनौती है। हम जानते हैं कि आदिवासियों जीवन श्रम, सामूहिकता, संवेदनशीलता, सादगी, समानता, सहजता, सरलता और सच्चाई पर आधारित है, और इसलिए उनके जीवन में किसी के प्रति दुर्भाव नहीं है और किसी से स्पर्धा नहीं है, और भरपूर सांस्कृतिक सौन्दर्य और सृजनात्मकता है।

आदिवासी समुदाय जिस तरह से जीवन-यापन करने के लिए कृषि, पशुपालन एवं परम्परागत ज्ञान का इस्तेमाल करता है, उससे प्रकृति का शोषण कम से कम होता है। प्रकृति में सृजन का मूल है बीज; पोषण देने वाली जननी है मिट्टी, जीवनदायिनी शक्ति के रूप में है जल, भोजन और आवास के रूप में ज़मीन और प्रकृति में जैव विविधता एवं संतुलन बनाने के लिए जानवर को देखा जाता है। प्राणिमात्र के अस्तित्व के लिए ये पाँच घटकों–जल, जंगल, जमीन, जानवर और बीज का होना अति आवश्यक है और इनका रक्षण, संरक्षण और संवर्धन करके ही इन सभी घटकों का स्वराज हासिल किया जा सकता है।

स्वराज की अवधारणा को यदि मानव जीवन में सम्मिलित किया जाए तो विभिन्न चुनौतियों जैसे की प्रकृति का असंतुलन, बेरोजगारी, भुखमरी, अंधविश्वास, असमानताएं (अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, जाति, लिंग, धर्म, रंग, भाषा, प्रान्त इत्यादि) के कारण खड़े हुए तनाव,संघर्ष, मतभेद,अशांति का समाधान हो सकता है। इस क्रम में यह आवश्यक है कि स्वराज को लेकर स्थानीय स्तर पर की जा रही व्यक्तिगत एवं सामुदायिक पहल, जिससे मध्य भारत के आदिवासी एवं गैर आदिवासी समाज के बीच एक ऐसा आधार निर्मित किया जाये जिससे स्वराज के विभिन्न घटकों के माध्यम से गाँधी के स्वराज को मूल्यों को अपना सके और आने वाली पीढीयों को स्वराज प्रदान कर सके।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम

प्रतिवर्ष की भांति दक्षिणी राजस्थान एवं उसकी सीमाओं से जुड़ते हुए मध्य प्रदेश एवं गुजरात के आदिवासी जिलों के समुदाय द्वारा कृषि एवं जनजातीय स्वराज समागम का आयोजन बांसवाडा में किया जाता रहा हैं। इस समागम में देश भर से विशेषज्ञ, विचारक, प्रमुख रूप से आदिवासी क्षेत्र के हज़ारों लघु व सीमांत कृषक एवं स्वराजी भागीदारी करते हैं एवं विभिन्न विषय मुख्यत: जल, जंगल, ज़मीन, पशु, बीज, खाद्य व पोषण स्वराज, बाल अधिकार इत्यादि पर गहन चर्चा करते हैं एवं समुदाय के प्रमुख सम्बंधित मुद्दे एवं उनसे जुड़ी हुई मांगो को नीति निर्माताओं एवं अन्य हितधारकों तक पहुंचाते हैं।

विगत वर्ष यह समागम एक नए स्वरूप में **"स्वराज संदेश - संवाद यात्रा"** के रूप में आयोजित किया गया था। यह यात्रा बांसवाड़ा से आचार्य श्री विनोबा भावे की जयंती दिनांक 11 सितम्बर 2022 से प्रारम्भ होकर महात्मा गाँधी की जयंती दिनांक 01 अक्टूबर 2022 को जयपुर पहुंची। दिनांक 01 अक्टूबर 2022 को दुर्गापुरा, जयपुर स्थित स्वतंत्रता सेनानी सर्वोदयी नेता श्री गोकुलभाई भट्ट की समाधि स्थल **'राजस्थान समग्र सेवा संघ'** में कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम का आयोजन किया गया। यात्रा के अंतिम चरण में दिनांक 02 अक्टूबर को आदिवासी समुदाय की ओर से तैयार किया गया स्वराज आग्रह पत्र माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत को एवं दिनांक 03 अक्टूबर को माननीय राज्यपाल को प्रस्तुत किया गया। माननीय मुख्यमंत्री एवं माननीय राज्यपाल द्वारा स्वराज संदेश - संवाद यात्रा के प्रयास की प्रशंसा की गयी एवं आदिवासी समुदाय के आग्रहों पर उचित कार्यवाही का आश्वासन भी दिया गया।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम – 2023

इस वर्ष यह समागम पुनः एक नए स्वरुप में आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। जिसके अंतर्गत दक्षिणी राजस्थान, मध्य प्रदेश एवं गुजरात कार्यक्षेत्र के विभिन्न संगठनों से चयनित सदस्य 'जनमंच के सदस्य' निर्णायक की भूमिका में लगभग आठ हज़ार (8,000) से अधिक आदिवासी समुदाय के सदस्यों के साथ अपने क्षेत्र की प्रथाएं, प्रक्रियाएं एवं मुद्दों पर गहन विचार करेंगे एवं आग्रह पत्र के रूप में अपने मुद्दों के स्थानीय स्तर पर संभव हो सकने वाले समाधानों को तैयार कर नीति निर्माताओं के समक्ष प्रस्तुत करेंगे।

उद्देश्य

1. आदिवासी क्षेत्र की स्वराज की विचारधारा पर आधारित खाद्य एवं बीज स्वराज, जल एवं वन स्वराज, मृदा एवं पशुधन स्वराज, बाल स्वास्थ्य एवं पोषण स्वराज, शिक्षा एवं बाल विकास स्वराज, संस्कृति एवं वैचारिक स्वराज के अंतर्गत की जा रही उत्तम प्रथाओं एवं व्यवहार (प्रैक्टिसेज) पर चिंतन कर सम्बंधित चुनौतियाँ एवं स्थानीय स्तर पर संभव समाधानों का समेकन कर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न हितधारकों तक पहुंचाना ।

2. मुद्दों एवं संभावित मुद्दों की पहचान एवं उन्हें विभिन्न हितधारकों तक पहुँचाने के प्रक्रिया में समुदाय के सदस्यों में **'जनमंच'** मॉडल से स्वामित्व भावना उत्पन्न करना ।

3. देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्र में सामानरुपी स्वराज समागम के आयोजन हेतु विभिन्न राज्यों के हितधारकों के साथ जुड़ाव स्थापित करना एवं उनके सहयोग से अन्य राज्यों में एवं राष्ट्रीय स्तर पर कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम की रूपरेखा तैयार करना।

कार्यक्रम की रणनीति का ढांचा मुख्यतः "सरंक्षित करना – पहुँच बनाना – बढ़ावा देना" (PROTECT – ACCESS – PROMOTE) के सिद्धांतो पर केन्द्रित होगा ।

कार्यप्रणाली

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम – 2023 का आयोजन बांसवाडा में आदिवासी समुदाय के नेतृत्व में आयोजित किया जाना प्रस्तावित है। यह महत्वपूर्ण कार्यक्रम चार मुख्य विषयों यथा:-

(1) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में पोषण सुरक्षा हेतु बीज, खाद्य एवं वानस्पतिक विविधता लिए एकीकृत कार्य;

(2) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में सततता के लिए ऊर्जा, जल और मृदा प्रबंधन की दक्षता;

(3) जलवायु परिवर्तन कार्यों और संप्रभुता के लिए युवाओं का नेतृत्व निर्माण;

(4) जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में आदिवासी संस्कृति और चक्रीय जीवनशैली का पुनर्जीवीकरण;

पर आधारित होगा।

समागम से पूर्व स्थानीय स्तर पर विभिन्न गतिविधियों के आयोजन द्वारा प्रत्येक विषय हेतु क्षेत्र के सभी 26 कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनो के कुल सदस्यों में से एक – एक सदस्य का चयन 'जनमंच के सदस्य' के रूप में किया जाना प्रस्तावित है। इस अनुसार कुल 520 सदस्यों में से 104 (26x4) सदस्यों का **'जनमंच'** के रूप में चयन किया जाएगा, जो कि क्षेत्र की विषयवार विभिन्न पद्धतियों, प्रथाओं एवं मुद्दों पर प्रारंभिक चर्चा करेंगे। अन्य 416 सदस्य निरीक्षक अथवा आब्जर्वर का कार्य कर करेंगे एवं आग्रह पत्र को तैयार करने एवं बड़े समूह के साथ चर्चा करने में सहयोग करेंगे।

जनमंच

यह एक ऐसा मंच है जो आमजन को सामूहिक रूप से भारतीय समाज की चुनौतियों के बारे में जानने, विचार विमर्श करने एवं उनका समाधान करने के लिए अवसर प्रदान करता है।

- समुदाय के सदस्यों से बना यह मंच उन नीतियों पर निर्णय लेती है जो उन्हें उपयुक्त एवं आवश्यक लगती है।
- जनमंच के सदस्य विभिन्न विशेषज्ञों के माध्यम से मुद्दों के बारे में समझते हैं। वे अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं और मंच के सदस्य मिलकर उनके सुझावों पर विचार – विमर्श करते है ।
- मंच के सदस्य विभिन्न विकल्पों और दृष्टिकोण को सुनने के बाद एक सुविचारित निर्णय पर आते हैं।

1. प्रथम दिवस (20 सितम्बर 2023)

प्रस्तावित तीन दिवसीय समागम के प्रथम दिवस पर चयनित **104 जनमंच सदस्यों** का आमुखीकरण किया जाकर सभी सदस्यों के साथ 'जनमंच' की तैयारी का आयोजन कर चारों विषयों पर गहन चर्चा की जानी प्रस्तावित है। प्रथम दिवस की समाप्ति सांस्कृतिक संध्या से किया जाना प्रस्तावित है।

2. द्वितीय दिवस (21 सितम्बर 2023)

द्वितीय दिवस पर सभी चारों विषयों पर जनमंच सदस्यों के साथ औपचारिक चर्चा की जानी प्रस्तावित है। इन 104 सदस्यों के साथ ही कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठनों के अतिरिक्त 416 सदस्य श्रोता एवं आब्जर्वर के रूप में उपस्थित रहेंगे एवं जनमंच की चिंतन एवं चर्चा की प्रक्रिया से आग्रह पत्र (चार्टर) का प्रथम प्रारूप तैयार करेंगे। सांयकालीन प्रत्येक 26 संगठनों के क्षेत्र से आमंत्रित 5000 से अधिक ग्राम स्वराज समूह एवं सक्षम समूह सदस्यों के बड़े समूह के साथ गहन चर्चा करने के उपरांत आग्रह पत्र को अंतिम रूप दिया जायेगा। द्वितीय दिवस की संध्या में भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन प्रस्तावित है।

3. तृतीय दिवस (22 सितम्बर 2023)

समागम में पधारे हुए अतिथियों, नीति निर्माताओं, राजनेताओं, विशेषज्ञों, मीडिया एवं अन्य हितधारकों के समक्ष प्रत्येक विषय पर सम्बंधित जनमंच सदस्यों द्वारा आग्रह पत्र के बिंदुओ का प्रस्तुतीकरण किया जाना प्रस्तावित है।

समुदाय के साथ चर्चा की प्रक्रिया

उपरोक्त विभिन्न मुद्दों पर समुदाय के प्रयास, प्रयासों से सफ़लता के उदाहरण और समुदाय के सुझाव के संकलन को साझा करने एवं उनके प्रयासों से सीखने हेतु विचारों का आदान प्रदान किया जायेगा।

उपयुक्त विषयों पर चर्चा हेतु संभावित मार्गदर्शक बिंदु: (प्रतिधारण - Retention, पुनर्जीवित - Rejuvenation एवं लचीलापन – Resilience के आधार ढूंढने की दृष्टि से।

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में पोषण सुरक्षा हेतु बीज, खाद्य एवं वानस्पतिक विविधता लिए एकीकृत कार्य

1. जनजातीय क्षेत्र में खाद्य एवं कृषि प्रणाली में विविधता की स्थिति।
2. जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और क्षेत्र में भोजन और कृषि प्रणाली पर उसका प्रभाव।
3. खाद्य प्रणाली पर सकारात्मक प्रभाव के लिए जलवायु परिवर्तन के भीतर अनुकूलन और शमन के सन्दर्भ में संभावित हस्तक्षेप, जैसे समुदाय प्रबंधित बीज प्रणाली, मूल्य श्रृंखला दृष्टिकोण, पारिवारिक खेती दृष्टिकोण, खाद्य वन, सतत एकीकृत कृषि प्रणाली, पोषण संवेदी कृषि प्रणाली, हांगडी खेती इत्यादि।

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में सततता के लिए ऊर्जा, जल और मृदा प्रबंधन की दक्षता

1. गुणवत्ता एवं मात्रा के सन्दर्भ में ऊर्जा, जल एवं मृदा उपयोग दक्षता की वर्तमान स्थिति
2. क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और संसाधन उपयोग दक्षता पर उसका प्रभाव।
3. टिकाऊ पारिस्थितिकी तंत्र के लिए जल और ऊर्जा बजट-आधारित कार्यों जैसे उन्नत कार्य।

जलवायु परिवर्तन कार्यों और संप्रभुता के लिए युवाओं का नेतृत्व निर्माण

1. आदिवासी समुदाय में युवाओं की स्थिति
2. जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और जनजातीय जीवन एवं आजीविका पर उसका प्रभाव।
3. युवाओं का पारंपरिक जीवन एवं व्यवस्था से अलगाव के कारण।
4. जलवायु परिवर्तन कार्यों और आदिवासी संप्रभुता को फिर से जीवंत करने के लिए युवा नेतृत्व का विकास।

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में जनजातीय संस्कृति और चक्रीय जीवनशैली का पुनर्जीवीकरण

1. क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन की अभिव्यक्ति और आदिवासी समुदाय की टिकाऊ आजीविका पर उसका प्रभाव (जलवायु जोखिम मानचित्रण)
2. जलवायु परिवर्तन शमन एवं जलवायु परिवर्तन प्रेरित आपदा जोखिम (CCIDR) के विरुद्ध लचीलापन लाने हेतु संभावित हस्तक्षेप।
3. पारंपरिक जीवनशैली के उदाहरण एवं जलवायु परिवर्तन प्रेरित आपदा जोखिम के साथ अनुकूलता - कृषि वानिकी, प्राकृतिक खेती, खाद्य वन, भूमि क्षमता के आधार पर भूमि उपयोग, प्रकृति आधारित समाधान इत्यादि।

कार्यक्रम का स्थान

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम -2030 का आयोजन बांसवाडा जिला स्थित त्रिपुरा सुंदरी मंदिर प्रांगण के सामने दिनांक 20 सितम्बर से 22 सितम्बर 2023 तक किया जाना प्रस्तावित है ।

कृषि एवं आदिवासी स्वराज समागम के प्रमुख हितधारक

अपेक्षित परिणाम

- मुद्दों का चयन एवं संभावित समाधानों को विभिन्न हितधारकों तक पहुँचाने में समुदाय का स्वामित्व।
- कृषि एवं जनजातीय विकास संगठन एवं मंच से समर्पित सदस्यों का जुड़ाव बनेगा।
- युवाओं का वृहद स्तर पर स्थानीय मुद्दों से जुड़ाव बढेगा।
- राज्य स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर तक नीतिगत मुद्दों की गहरे से समझ विकसित होगी एवं एक प्रभावी कार्य-योजना तैयार होगी ।
- देश के अन्य राज्यों में समागम के आयोजन हेतु एक रूप-रेखा बन सकेगी।
- अन्य राज्यों से आमंत्रित सिविल सोसाइटी के सदस्य समागम का आयोजन एवं कार्यप्रणाली देख सकेंगे, जिससे उन्हें उनके क्षेत्र में समागम आयोजित करने में सुगमता होगी।

वाग्धारा दक्षिणी राजस्थान के बाँसवाड़ा ज़िले में स्थित एक स्वैच्छिक संस्था है। आदिवासी क्षेत्र में होने की वजह से संस्था द्वारा आदिवासियों की जीवन शैली, जीवन मूल्य एवं जीवन दर्शन का गहराई से अध्ययन और इसके तहत मानव एवं मानव के रिश्ते और मानव एवं प्रकृति के रिश्ते को समझने का प्रयास किया गया है। कार्यक्रम के तौर पर संस्था सच्ची खेती, सच्चा बचपन और सच्चा स्वराज को लेकर राजस्थान, गुजरात व मध्य प्रदेश में कार्यरत है। ताकि भावी पीढ़ियों को आदिवासी संस्कृति को संरक्षित करने व सहेजने के प्रति तैयार किया जा सके। साथ ही आदिवासी क्षेत्र में आदिवासी समाज की संप्रभुता और टिकाऊ विकास को सुनिश्चित करने, और समाज की सम्मिलित विकास की सोच के साथ युवाओं को तैयार कर आदिवासी समाज के विकास के लिए उनकी भागीदारी को बढ़ाने की दिशा में प्रयासरत है। जिस हेतु कई प्रकार के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन सामुदायिक संगठनों के साथ मिल कर किया जा रहा है | इन कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण है,आदिवासी समुदायों की मांग को विभिन्न स्तरों तक सफलतापूर्वक ले जाना और इसके लिए एक प्रभावी कार्य है, समुदाय के प्रतिनिधियों को एक ऐसा स्थान प्रदान करना जहाँ वे बैठकर नीतिगत कार्यों के लिए नीति निर्माताओं से चर्चा कर सके।

VAAGDHARA